ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.21, No.1, Jan. – March, 2026/35

प्रतिस्पर्धी छात्रों में द्रव्य–दुर्व्यसन : समाजशास्त्रीय अन्तर्दृष्टि

कृतिका सिंह

https://doi.org/ 10.61410/had.v21i1.265

छात्रों में द्रव्य–दुर्व्यसन की समस्या ने पूरी दुनिया का ध्यान अपनी ओर खींचा है, क्योंकि आज यह समस्या विकराल रूप धारण कर चुकी है। आज यह समस्या किसी एक समाज, किसी एक संस्कृति अथवा किसी एक देश तक सीमित नहीं है बल्कि यह एक सार्वभौमिक समस्या बनकर उभरी है। इस समस्या को हम नई नहीं कह सकते बल्कि ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर कहा जा सकता है कि मानव सभ्यता के उद्भव काल से ही यह निरन्तर बनी हुई है। प्राचीन काल ही नहीं बल्कि आज भी कई संस्कृतियों एवं लघु मानव समूहों में विभिन्न प्रकार के मादक पदार्थों के उपयोग को सांस्कृतिक के साथ ही धार्मिक मान्यता मिली हुई थी, और है भी।

जिन द्रव्यों या पदार्थों के प्रयोग से व्यक्ति में व्यवहार सम्बन्धी परिवर्तन उत्पन्न होता है, उन्हें मनोसक्रिय औषधियाँ कहते हैं। ये ऐसी औषधियाँ या पदार्थ हैं जिनके सेवन से व्यक्ति की चेतना, मनोदशा या चिन्तन–प्रक्रिया में परिवर्तन हो जाता है। ये पदार्थ या औषधियाँ व्यक्ति के मस्तिष्क की उन क्रिया–प्रणालियों को प्रभावित करती हैं जो सामान्यतः अभिप्रेरक प्रक्रियाओं, चिन्तन एवं मनोदशा को नियमन करती हैं।

विगत कुछ वर्षों से भारत में मादक द्रव्यों के सेवन की प्रवृत्ति में काफी उछाल आया है और चोरी–छिपे इनका विदेशों से आयात होता रहा है। यह कहना अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं होगा कि विश्वविद्यालयो, महाविद्यालयों तथा अनेकानेक कोचिंग संस्थानों में अध्ययनरत छात्रों में इसके प्रयोग की बाढ़ सी आ गयी है। संसार से ऊबे हुए लोग, चिन्ता रहित, मुक्त एवं स्वच्छन्द जीवन जीने की लालसा में तथा मानसिक शांति के लिए लोग मादक पदार्थों का सेवन करते हैं। यह भी देखने में आया है कि इनके सेवन से युवा पीढ़ी में यौन–स्वच्छन्दता भी बढ़ी है जो वर्तमान के साथ भविष्य के लिए भी भयावह स्थिति की सूचक है। इस भयावह स्थिति के उत्पन्न होने के अनेक कारण हैं जिन पर इस लघु शोध–प्रपत्र में प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

अनुसन्धान–समस्या

द्रव्य दुर्व्यसन जैसी सामाजिक समस्या का अध्ययन मनोवैज्ञानिकों एवं समाजशास्त्रियों का रोचक विषय रहा है। इन द्रव्यों का सेवन न केवल एक भौतिक, मनोवैज्ञानिक एवं चिकित्सकीय समस्या है बल्कि यह एक महत्वपूर्ण सामाजिक समस्या भी है। चिकित्सकीय समस्या के रूप में इसे चिकित्सक एवं रोगी के सम्बन्धो द्वारा समझा जा सकता है, जबकि सामाजिक समस्या के रूप में यह केवल अपराधी को दण्ड देने से सम्बन्धित मामलों तक ही सीमित है। सांस्कृतिक समस्या के रूप में द्रव्य–दुर्व्यसन की समस्या सामाजिक मनौवैज्ञानिक तथा मनोचिकित्सकीय पक्षों के विश्लेषण से सम्बन्धित है। प्रस्तुत शोध–आलेख की समस्याएँ निम्नलिखित हैः–

• शोधिका एवं सहायक आचार्या, समाजशास्त्र विभाग, एम0ए0, नेट, समाजशास्त्र के0एन0आई0पी0एस0एस0, सुल्तानपुर।

1– प्रतिस्पर्धी छात्रों द्वारा द्रव्य–दुर्व्यसन के कारणों का पता लगाना ।

2– क्या द्रव्य–दुर्व्यसन सामाजिक उपेक्षा का परिणाम है?

3– द्रव्य–दुर्व्यसन में प्रथम प्रवेश का कारण क्या रहा?

4– द्रव्य–दुर्व्यसन का सर्वाधिक प्रभाव किस पर पड़ता है?

5– द्रव्य पदार्थों के प्रयोग के कारणों का ज्ञान प्राप्त करना।

6– द्रव्य–दुर्व्यसन वाले प्रतिस्पर्धी छात्रों की बढ़ती संख्या के कारणों का पता लगाना।

अनुसन्धान–पद्धति

किसी भी अनुसंधान का लक्ष्य समाज में व्याप्त समस्याओं के कारणों की खोज एवं उस समस्या के निराकरण के उपायों की खोज करना है। इसके लिए अनुसंधान के कुछ विशिष्ट विधियों का प्रयोग निष्कर्ष की प्राप्ति के लिए किया जाता है। शोध–पद्धति से तात्पर्य उस विधि से है जिसके द्वारा शोधक अपने शोध कार्य को पूर्ण कर वस्तुनिष्ठ निष्कर्ष को प्राप्त करता है। गुडे एवं हॉट का मानना है कि ''जब विज्ञान की आधारभूत बातों को समाजशास्त्र के क्षेत्र में लागू किया जाता है तो उसे समाजशास्त्र की अध्ययन पद्धति कहा जाता है।[1]

प्रस्तुत लघु शोध निबन्ध मेरी पी.एच.डी. थीसिस का अंश मात्र है। यह शोध–निबन्ध पी–एच०डी० हेतु संकलित किये गये ऑकड़ों पर आधारित है। प्रयागराज के विभिन्न कोचिंग संस्थानों में विभिन्न केन्द्रीय एवं राज्य स्तरीय सेवाओं की तैयारी हेतु नामांकित (इनरोल्ड) छात्रों को इस अध्ययन में शामिल किया गया है। 250 प्रतिस्पर्धी छात्रों का चयन यादृच्छिक प्रतिदर्श प्रणाली (रैण्डम) के आधार पर किया गया है। साक्षात्कार हेतु संरचित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है। अनुसूची के प्रश्नों के चयन में परम्परा तथा आधुनिकता का ध्यान रखने का प्रयास किया गया है। अधिकांश प्रश्नों का स्वरुप प्रतिबन्धित होने के कारण छात्र–प्रश्नों का उत्तर सकारात्मक अथवा नकारात्मक देने हेतु स्वतन्त्र थे।

द्रव्य–दुर्व्यसन में सर्वप्रथम प्रवेश का कारणः

द्रव्य–दुर्व्यसन की प्रक्रिया प्रथमतः एकाएक या तो दवा के तौर पर या किन्हीं अन्य कारणों से इसके सेवन की शुरुआत होती है जो धीरे–धीरे आदत के रूप में बदल जाती है। पहले तो छात्र जानबूझ कर चेतनावस्था में इस प्रकार के द्रव्यों का सेवन करता है जो आगे चलकर उसकी आदत बन जाती है। आज हर कॉलेज, विश्वविद्यालय, कोचिंग संस्थानों में मादक पदार्थों का सेवन करने वाले छात्र मिल जायेंगे। इसके प्रयोग की लत कभी–कभी आपूर्तिकर्ता द्वारा भी लगायी जाती है। इस प्रकार के व्यापार में प्रायः युवा वर्ग ही सम्मिलित रहता है। एक तो वे स्वयं इस प्रकार के मादक पदार्थों का सेवन करते हैं, दूसरे अन्य युवकों को भी इस दुर्व्यसन में डाल देते हैं। कई बार यह भी देखा गया है कि एक बार लत पड़ जाने पर छात्र इस दुर्व्यसन को जीवन भर नहीं छोड़ पाते हैं। परम्परावादी विचारक मादक पदार्थों के सेवन का कारण वैयक्तिक असमानता को मानते हैं।

वैयक्तिक असमानताओं, चिन्ताओं तथा व्यक्ति की कमजोरियों को दूर करने हेतु प्रायः विद्यार्थी द्रव्य–दुर्व्यसनों के जाल में फंस जाते हैं। स्वयं को असामान्य समझने वाले छात्र सामान्य बनने की

लालसा में मादक–द्रव्यों का प्रयोग करने लगते हैं। एक बार इस दुर्व्यसनो के मकड़जाल में फॅस जाने के उपरान्त आसानी से इसके सेवन से पीछा नहीं छुड़ा सकते। प्रायः यह देखा गया है कि इस प्रकार की वस्तुओं का प्रयोग करने वाले लोगों पर यह एक नियन्त्रणकारी वस्तु के रूप में स्थापित हो जाती है और इसके प्रयोग के बिना व्यक्ति एक अभाव महसूस करता है और उसका स्वयं पर से नियन्त्रण समाप्त हो जाता है। कुछ लोग प्रदर्शन के लिए भी मादक द्रव्यों का सेवन करते हैं।

कुछ समाजशास्त्रियों की मान्यता है कि टूटे परिवार भी द्रव्य–दुर्व्यसनो के लिए जिम्मेदार होते हैं। बर्ट ने बताया कि टूटे परिवार में एक बात समान थी कि वे सभी शराब का सेवन करते थे। मानसिक निर्भरता भी द्रव्य–दुर्व्यसन हेतु प्रोत्साहित करती है। इसमें व्यक्ति पूर्णतः मादक द्रव्यों पर निर्भर हो जाता है। आज के भौतिकवादी युग में कठिन प्रतियोगिता, स्केलिंग पद्धति, स्वप्नों का टकराव, मानसिक तनाव, युवा वर्ग की आकांक्षाओं की बलि, भर्ती के लिए नित्य नये कानून, बेरोजगारी, परम्पराओं का ह्रास एवं कुंठाओं के कारण साहस जुटाने के लिए भी छात्र मादक पदार्थों की ओर आकृष्ट हो रहे हैं एवं निःसंकोच प्रयोग कर रहे हैं। ऐसा विश्वास किया जाता है कि द्रव्य–दुर्व्यसनो में फँसे अधिकांश व्यक्ति अस्थिर चित्त वाले होते हैं। लोग चिन्ता से मुक्ति एवं अपने व्यक्तित्व की बुराईयों को छिपाने के लिए मादक द्रव्यों का प्रयोग करते हैं।

परिवार एवं मित्र–मण्डली का भी नशीले पदार्थों के सेवन में मुख्य भूमिका होती है। नशीले पदार्थों का सेवन करने वाले अधिकांश विद्यार्थियों के परिवारों में अव्यवस्था के साथ प्रेम एवं स्नेह का अभाव होता है। वास्तव में परिवार से दूर रहने वाले छात्रों विशेषकर छात्रावासों में रहने वालों में यह प्रवृत्ति अधिक पायी जाती है।

आनन्द प्राप्त करने की चाहत मनुष्य की सबसे प्राचीन चाहत है। मादक पदार्थों का प्रयोग भी कुछ छात्र इसी कारण से करते हैं। आनन्द प्राप्त करने के लिए लिए मादक पदार्थों का सेवन करते समय छात्र यह सोचते है कि वह जब चाहेगा इसे छोड़ देगा, लेकिन एक बार जब वह इन पदार्थों के दुष्चक में फंस जाता है तो लगातार इनका सेवन करने लगता है।

प्रतिस्पर्धी छात्रों द्वारा सर्वप्रथम मादक पदार्थों के प्रयोग का कारणः

प्रतिस्पर्धी छात्रों में द्रव्य–दुर्व्यसन अत्यन्त गम्भीर समस्या है। छात्रों का. एक वर्ग आज कठिन प्रतियोगिता के कारण तनावों, पाठ्यक्रमों की नीरसता, आधुनिकता एवं पाश्चात्य संस्कृति के पड़ने वाले प्रभावों से प्रभावित होकर नशे की संस्कृति के गिरफ्त में आकर मादक पदार्थों का उपयोग करने लगता है। नशे की संस्कृति के बीच उज्जवल भविष्य को तलासती युवा पीढ़ी द्रव्य–दुर्व्यसन में पड़कर दिग्भ्रमित हो रही है। मादक पदार्थों के प्रयोक्ताओं द्वारा सर्वप्रथम नशा करने के कारणों पर निम्नलिखित सारणी विस्तृत प्रकाश डालती है :

सारणी संख्या–1
सर्वप्रथम द्रव्य–दुर्व्यसन में पड़ने का कारण

	कारण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	मित्रों के दबाव में आकर	90	36.00
2.	उत्सुकतावश	78	31.20
3.	परिवार के लोगों की देखा–देखी	22	8.80
4.	चिंता–मुक्ति के लिए	19	7.60
5.	परीक्षा में असफलता मिलने पर	27	10.80
6.	प्यार में असफल होने पर	05	2.00
7.	कोई उत्तर नहीं	09	3.60
	योग	**250**	**100.00**

सारणी संख्या–1 उस प्रश्न के उत्तर पर आधारित है जिसमें उत्तरदाताओं से उनसे प्रथम बार द्रव्य–दुर्व्यसन के प्रयोग के बारे में पूछा गया था, जिसके प्रत्युत्तर में सर्वाधिक अर्थात 36.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि उन्होंने प्रथम बार मादक पदार्थों का प्रयोग मित्र मण्डली के दबाव में आकर किया था, तथा सबसे कम 2.00 प्रतिशत ने प्रयोक्ता उत्तरदाताओं ने स्पष्टतः कहा कि उन्होंने प्यार में असफल या यूं कहें कि धोखा खाने पर प्रथम बार इसका सेवन किया था। तत्पश्चात 31.20 प्रतिशत प्रयोक्ताओं ने उत्सुकतावश तथा 8.80 प्रतिशत ने परिवार के लोगों की देखा–देखी नशे का सेवन किया था। 7.60 प्रतिशत ने चिंतामुक्ति हेतु एवं 10.80 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने परीक्षा में असफल होने पर मादक पदार्थों का सेवन किया था। 09 अर्थात 3.60 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस सम्बन्ध में कोई उत्तर नहीं दिया।

प्रतिस्पर्धी छात्रों द्वारा द्रव्य–दुर्व्यसन का कारणः–

भारत में मादक द्रव्यों के प्रयोग को असामाजिक व्यवहार नहीं माना जाता है। यहाँ इसे विपथगामी व्यवहार माना जाता है। वर्तमान में यह समस्या विशेष रूप से छात्रों में देखी जा रही है, जिनके ऊपर समाज के पुनर्निर्माण की महती जिम्मेदारी होती है। द्रव्य–दुर्व्यसन की समस्या ने प्रतिस्पर्धी छात्रों के भविष्य को अन्धकार में ढकेल दिया है। द्रव्य–दुर्व्यसन में फंसा छात्र सामाजिक नैतिकता के साथ सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्यों की तनिक भी परवाह नहीं करता है। द्रव्य–दुर्व्यसन के परिणामस्वरूप छात्र की चिन्तनशक्ति कमजोर पड़ जाती है, जिसके कारण वह समाज के साथ वैयक्तिक हित के सम्बन्ध में भी कुछ सोच पाने में अक्षम हो जाता है। निम्नलिखित सारणी संख्या–2 में प्रतिस्पर्धी छात्रों द्वारा द्रव्य–दुर्व्यसन के कारणों पर प्रकाश डाला गया हैः

सारणी संख्या–2

द्रव्य–दुर्व्यसन के कारण

	कारण	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
1.	तनाव कम करने के लिए	27	10.80
2.	प्रसन्न रहने के लिए	23	9.20
3.	उदासीनता कम करने के लिए	12	4.80
4.	ज्ञानेन्द्रियों की सक्रियता हेतु	09	3.60
5.	मित्रों के दबाव में	99	39.60
6.	माडलिंग बिहैवियर के कारण	18	7.20
7.	फैशन प्रस्थिति के कारण	10	4.00
8.	अध्ययन में सुधार के भ्रम में	22	8.80
9.	रात्रि जागरण हेतु	28	11.20
10.	कोई उत्तर नहीं	02	0.80
	योग	**250**	**100.00**

उपरोक्त सारणी के आंकड़ों के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि मादक पदार्थों का प्रयोग करने वाले प्रतिस्पर्धी छात्रों में सर्वाधिक 39.60 प्रतिशत मित्रों के दबाव अथवा प्रभाव के कारण इन द्रव्यों का सेवन करते हैं। तत्पश्चात 10.80 प्रतिशत तनाव कम करने हेतु, 9.20 प्रतिशत प्रसन्न रहने के लिए, 4.80 प्रतिशत उदासीनता कम करने के लिए तथा 3.60 प्रतिशत उत्तरदाताओ का मानना है कि इसके प्रयोग/सेवन से ज्ञानेन्द्रियों की सक्रियता बढ़ जाती है। इसके उपरान्त 7.20 प्रतिशत माडलिंग विहैवियर के कारण, 4.00 प्रतिशत फैशन प्रस्थिति के कारण, 8.80 प्रतिशत अध्ययन में सुधार के भ्रम के साथ 11.20 प्रतिशत का मानना है कि प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं की तैयारी हेतु रात्रि काल का समय सबसे उपयुक्त होता है। रात्रि में नींद न लगे इसलिए मादक द्रव्यों का सेवन करना पड़ता है। शेष 0.80 प्रतिशत ने इस सम्बन्ध में कोई उत्तर नहीं दिया।

मादक द्रव्यों का प्रभावः

प्रतिस्पर्धी छात्रों से जब यह पूछा गया कि द्रव्य–दुर्व्यसन का सर्वाधिक प्रभाव किस पर पड़ता है? इसके प्रत्युत्तर के लिए पाँच विन्दुओं का एक अनुमाप दिया गया जिस पर निम्नलिखित सारणी प्रकाश डालती है :

सारणी संख्या–3

द्रव्य–दुर्व्यसन का सर्वाधिक प्रभाव किस पर पड़ता है?

	प्रभाव	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	स्वयं पर	60	24.00
2.	परिवार पर	108	43.20
3.	शैक्षणिक परिसर पर	21	8.40
4.	मित्रों पर	32	12.80
5.	समाज पर	29	11.60
	योग	**250**	**100.00**

उपरोक्त सारणी के ऑकड़ों से ज्ञात होता है कि कुल 250 प्रयोक्ता प्रतिस्पर्धी छात्रों में से 43.20 प्रतिशत यह मानते हैं कि द्रव्य–दुर्व्यसन का सर्वाधिक प्रभाव परिवार पर पड़ता है। 24.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का स्पष्ट मानना है कि द्रव्य–दुर्व्यसन का सर्वाधिक प्रभाव व्यसनी पर ही पड़ता है। तत्पश्चात 12.80 प्रतिशत का मानना है कि द्रव्य–दुर्व्यसन का सीधा प्रभाव मित्रों पर तथा 11.60 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि इस व्यसन का सर्वाधिक प्रभाव समाज पर पड़ता है। 8.40 प्रतिशत का मानना है कि इससे शैक्षणिक परिसर सर्वाधिक प्रभावित होता है।

मादक द्रव्यों के प्रसार का कारणः

जब प्रतिस्पर्धी छात्रों से पूछा गया कि मादक द्रव्यों के प्रसार का कारण क्या है? तो जो उत्तर प्राप्त हुए उस पर सारणी संख्या–4 विस्तृत प्रकाश डालती हैः

सारणी संख्या–4

द्रव्य–दुर्व्यसन के प्रसार का कारण

	कारण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	आधुनिकीकरण	47	18.80
2.	पश्चिमीकरण	58	23.20
3.	औद्योगीकरण	46	18.40
4.	नगरीकरण	55	22.00
5.	शिक्षा का प्रसार	28	11.20
6.	उपलब्धता	26	10.40
	योग	**250**	**100.00**

उपरोक्त सारणी के विश्लेषण से स्पष्ट है कि लगभग सभी द्रव्य–दुर्व्यसनी छात्र ये मानते हैं कि समाज में तीव्र गति से हो रहे परिवर्तनों के कारण इस दुर्व्यसन के प्रसार को बढ़ावा मिला है। जिसमें 18.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने आधुनिकीकरण को, 23.20 प्रतिशत ने पश्चिमीकरण को, 18.40 प्रतिशत ने औद्योगीकरण को, 22.00 प्रतिशत ने बढ़ते हुए नगरीकरण को, 11.20 ने शिक्षा के प्रसार को तथा 10.40 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इसकी उपलब्धता को इसके प्रसार का कारण माना है।

द्रव्य–दुर्व्यसन एक राष्ट्रीय समस्याः

द्रव्य–दुर्व्यसन में प्रायः एक पदार्थ का वैकृत उपयोग होता है जिसके परिणामस्वरूप कभी–कभी खतरनाक व्यवहार उत्पन्न होते हैं। इस दशा में व्यक्ति सतत् सामाजिक, व्यावसायिक, पारिवारिक, मनोवैज्ञानिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं की उपस्थिति के बावजूद भी द्रव्य–दुर्व्यसन में संलिप्त रहता है जिसके गम्भीर परिणाम दृष्टिगोचर होते हैं। कभी–कभी व्यक्ति मनचाहा या आवश्यक प्रभाव प्राप्त करने के लिए क्रमशः द्रव्य की अधिक मात्रा का सेवन करने लगता है जिससे अनेकानेक शारीरिक एवं सामाजिक विकृतियाँ उत्पन्न होती हैं जिसके कारण यह एक राष्ट्रीय समस्या का रूप ग्रहण कर लेती है। उत्तरदाताओं से जब यह पूछा गया कि क्या वे इसे एक राष्ट्रीय समस्या के रूप में देखते हैं तो जो उत्तर प्राप्त हुए कर उस पर सारणी संख्या– 5 विधिवत प्रकाश अलती हैः

सारणी संख्या–5

क्या द्रव्य–दुर्व्यसन एक राष्ट्रीय समस्या है?

	प्रत्युत्तर	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
1.	हाँ	174	69.60
2.	नहीं	76	30.40
	योग	**250**	**100.00**

सारणी संख्या–5 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल 250 प्रयोक्ताओं में से 69.60 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि मादक द्रव्यों का बढ़ता प्रसार एक राष्ट्रीय समस्या है। 30.40 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि यह एक समस्या तो हो सकती है किन्तु कम से कम राष्ट्रीय समस्या नहीं है।

क्या द्रव्य–दुर्व्यसन मानव व्यवहार एवं समायोजन को प्रभावित करता है? इस सम्बन्ध में अनेक शोधों से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर कहा जा सकता है कि कुछ समय पहले तक द्रव्य–दुर्व्यसन की एक सामाजिक कलंक के रूप में नहीं देखा जाता था परन्तु आज निश्चित ही मनुष्य के द्रव्य–दुर्व्यसन सम्बन्धी व्यवहार के साथ सामाजिक कलंक एवं लांक्षन जुड़ गया है। आज द्रव्य–दुर्व्यसन के विकास को एक व्यवहार विकृति के रूप में देखा जाता है। इस विकृति के विकास में व्यक्ति की चिंतन प्रक्रियाओं, मनोदशा, अभिप्रेरणाओं एवं व्यक्तित्व की विशेषताओं की विशेष भूमिका मानी गयी है।

संदर्भ

1– William J. Goode and Paul K. Hatt: Methods in Social Research, New York, 1952, P.5

2- Bourdieu Pierre 1986 The Forms of Capital (सांस्कृतिक और सामाजिक पूंजी का नशे की प्रवृत्ति पर प्रभाव)

3- समाचार–पत्र, शोध–पत्र, सरकारी रिपोर्ट एवं सर्वेक्षण NFHS-5 2020-21 ग्रामीण क्षेत्रों में नशे की प्रवृत्ति पर आंकड़े।

4– विश्व स्वास्थ्य संगठन WHO की रिपोर्ट मादक पदार्थों के दुष्प्रभावों का अध्ययन।

5– शर्मा, वी0 और पाण्डेय एस0 (2020), भारतीय युवाओं में मादक पदार्थों की बढ़ती प्रवृत्ति: एक समाज भारतीय विश्लेषण इंडियन जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज 35(4)

- **कृतिका सिंह, ईमेल singhsinghkriti09@gmail.com Mob.- 6394928952**